(समाजशास्त्र)

(1)

2/4/20

BA- BA Part-VI
Paper IV

सामाजिक शोध
(Social Research)

Prepared:
Dr Anand Kumar
Reader
Deptt of Sociology
Sherghati College

→ सामाजिक शोध

मानव एक जिज्ञासु प्राणी है। उसने प्रकृति को समझने एवं अपनी समस्याओं के समाधान के लिए हमेशा प्रयास किया है। वह अज्ञात तथ्यों का पता लगाने की दिशा में निरन्तर आगे बढ़ता जा रहा है। पहले उसने प्राकृतिक घटनाओं को और फिर उसने सामाजिक घटनाओं को समझने की कोशिश की है। वर्तमान युग गतिशीलता का युग है। गतिशीलता में वृद्धि के साथ ही समाज के मूल्य और मान्यताओं में भी परिवर्तन हुआ है। परिवर्तन के इस क्रम में मानव सभ्यता का निरन्तर विकास होता जा रहा है। इस युग में दो शब्द सबसे अधिक प्रचलित हैं — शोध (Research) और विज्ञान (Science) मानव सभ्यता का मूल आधार क्या है? वे कौन से तत्व हैं जिनकी सहायता से विज्ञान आज सफलता पूर्वक आगे बढ़ रहा है, इस प्रकार जब सामाजिक क्षेत्र के प्रश्नों के उत्तर खोजने का क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित प्रयास किया जाता है तो उसे ही सामाजिक शोध, अनुसंधान अन्वेषण या खोज का नाम दिया जाता है।

→ सामाजिक शोध का अर्थ एवं परिभाषाएँ — सामाजिक-शोध का अर्थ किसी सामाजिक समस्या को सुलझाने या किसी प्राक्कल्पना की परीक्षा करने नवीन घटनाओं को खोजने या कुछ घटनाओं के बीच नवीन सम्बन्धों को ढूढने के उद्देश्य से किसी-यथार्थ-पद्धति का उपयोग है। यह यथार्थ पद्धति इस प्रकार की होनी चाहिए जो कि वैज्ञानिक शर्तों को पूरी करती हो तथा जिसकी सहायता से अनुसंधान किए गए विषय का सत्यापन सम्भव हो।

→ संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि सामाजिक घटनाओं या विद्यमान सिद्धान्तों के सम्बन्ध में नवीन ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रयोग में लाई गई वैज्ञानिक पद्धति सामाजिक शोध है।

→ 2

परिभाषा —

पी० वी० यंग — सामाजिक शोध का अर्थ पूर्णतया स्पष्ट है —

व्याख्या — सामाजिक शोध एक वैज्ञानिक योजना है जिसका उद्देश्य तार्किक तथा क्रमबद्ध पद्धतियों के द्वारा नवीन तथ्यों का अन्वेषण अथवा पुराने तथ्यों की पुनः परीक्षा तथा उसमें पाए जाने वाले अनुक्रम अन्तःसम्बन्धों कारण सहित व्याख्याओं तथा उनको संचालित करने वाले स्वाभाविक नियमों का विश्लेषण करना है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि —

सामाजिक शोध वह वैज्ञानिक पद्धति है जिसके द्वारा सामाजिक घटनाओं व समस्याओं के कारणों अन्तःसम्बन्धों तथा उनमें अन्तर्निहित प्रक्रियाओं का अध्ययन, विश्लेषण किया जाता है। सामाजिक शोध सामाजिक जीवन की — वैज्ञानिक अनुसन्धान है।

→ सामाजिक शोध के प्रमुख चरण — (Steps in Social Research)

→ (1) सर्वप्रथम किसी एक विषय का चुनाव कर लिया जाता है जिसका अध्ययन करना है।
विषय का चुनाव करते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि शोध कार्य के दृष्टिकोण से वह विषय व्यावहारिक है या नहीं। साथ ही इस बात का ध्यान स्पष्ट रखना पड़ता है

→ (2) विषय का चुनाव कर लेने के पश्चात् यह आवश्यक है कि हम उस विषय से सम्बन्ध अन्य शोध पुस्तकों का अध्ययन करें और अपने की अन्य शोधकर्ताओं के विचारों, निष्कर्षों तथा पद्धतियों से परिचित करलें।

→ (3) इस दिशा में तीसरा चरण अध्ययन से सम्बद्ध इकाइयों को परिभाषित करना है। प्रायः शोध कर्ता को अपने अध्ययन कार्य में अत्यधिक कठिनाई इस कारण होती है कि प्रारम्भ में ही इकाइयों का स्पष्टीकरण नहीं किया गया है। वास्तव इकाइयों का अर्थ स्पष्ट होने का तात्पर्य अध्ययन का लक्ष्य व क्षेत्र का भी स्पष्टीकरण है।

Scanned by TapScanner

→ (4) सामाजिक शोध का चौथा चरण प्राक्कल्पना का निर्माण है। अपने शोध विषय के सम्बन्ध मे प्राथमिक ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात शोधकर्ता अपने विचार से एक ऐसा सिद्धान्त या निष्कर्ष बना लेता है जिसके सम्बन्ध मे वह यह कल्पना करता है कि वह सिद्धान्त या निष्कर्ष बना लेता है जिसके सम्बन्ध मे वह यह कल्पना करता है कि वह सिद्धान्त सम्भवतः उसके अध्ययन का आधार सिद्ध हो सकता है।

→ (5) प्राक्कल्पना का निर्माण कर लेने के पश्चात् सूचना के स्रोत तथा अध्ययन के लिए उपयोगी पद्धतियो का निर्धारण आवश्यक होता है।

→ (6) पद्धतियो व प्रविधियो का चुनाव हो जाने के पश्चात् वास्तविक शोध कार्य उस समय आरम्भ होता है जबकि तथ्यो का निरीक्षण व सकलन का काम शुरु किया जाता है।

→ (7) तथ्यो का संकलन कर लेने के पश्चात उनको शोध कार्य के लिए वास्तव मे उपयोगी बनाने के लिए निश्चित क्रमो तथा श्रेणियो मे वर्गीकरण करना होता है।

→ (8) निष्कर्षीकरण एवम् नियमो का प्रतिपादन सामाजिक शोध का अन्तिम चरण है जो कि तथ्यो के वर्गीकरण व विश्लेषण के पश्चात् सम्भव होता है।

From -
Dr. Arun Kumar
Reader
Deptt of Sociology
Shershah College
(Sasaram)

Scanned by TapScanner